आजीविका
(विशेष परियोजना)

(आरोह फाउंडेशन द्वारा संचालित, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार की योजना)

गरीबी रेखा के नीचे युवक-युवतियों के लिए रोजगार पाने का सुनहरा अवसर

संस्करण 11 - फरवरी 2014

प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशाला का आयोजन

छतरपुर, सागर और दमोह केन्द्र पर आयोजित की गई प्रशिक्षण कार्यशाला

प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए दिया गया प्रशिक्षण

कुशल प्रशिक्षक द्वारा ही उच्चस्तरीय प्रशिक्षण की कल्पना की जा सकती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए आरोह फाउंडेशन द्वारा बुंदेलखंड में संचालित आजीविका (विशेष परियोजना) के तहत चलाए जा रहे कौशल प्रशिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। 17 फरवरी को छतरपुर में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यशाला में लक्ष्य और उपलब्धियों पर चर्चा की गई। लाभार्थियों के चयन, प्रशिक्षण, प्लेसमेंट और उनकी ट्रैकिंग के बारे में ट्रेनिंग मैनेजर अशफाक उमर और परियोजना समन्वयक अंजुम आलम द्वारा प्रशिक्षकों को दिशानिर्देश दिया गया, जिससे जरूरतमंद लोगों तक इस योजना का लाभ पहुंच सके और कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके। ट्रेनिंग के दौरान लाभार्थियों के रोजगार से जुड़े तथ्यों पर

कार्यशाला में प्रशिक्षण का स्तर सुधारने के गुण बताते प्रशिक्षण प्रबंधक अशफाक उमर

विशेष ध्यान देने की भी बात कही गई। साथ ही इस योजना से जुड़े लाभ और इसे आगे संचालित करने के बारे में भी प्रशिक्षकों को बताया गया। योजना के संचालन में आने वाली समस्याओं पर भी विचार–विमर्श किया गया। योजना को पूरी तरह से सफल बनाने के लिए कार्यशाला में इस मुद्दे पर पूरा जोर दिया गया। प्रशिक्षण में यह भी बताया गया कि गांव–गांव जाकर ग्राम प्रधान से मिल कर उनकों योजना के बारे में समझाना और गांव के बीपीएल लोगों को रोजगार करने के लिए जागरूक करना है। प्रशिक्षण के बाद ज्यादातर लाभार्थियों को शहर में रह कर नौकरी करने की दिक्कत आती है। ऐसे में उनकी सुविधा के लिए उनके आस–पास के इलाके में रोजगार दिलाना है। ज्यादातर मामलों में लाभार्थियों के साथ यह देखने को मिलता है कि वह अपना गांव छोड़कर रोजगार करने के लिए शहर नहीं जाते हैं ऐसे में उनके घर जाकर घर वालों को रोजगार की महत्ता बताना और उन्हें रोजगार करने के लिए प्रेरित करना है।

19 फरवरी को दमोह जिले के पथरिया केन्द्र पर आयोजित कार्यशाला में लाभार्थियों के कौशल वृद्धि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम को बेहतर बनाने और उसे लाभार्थियों तक सही ढंग से पहुंचाने पर विशेष जोर दिया गया। ट्रेनिंग मैनेजर अशफाक ने बीपीएल लाभार्थियों के लिए तय पाठ्यक्रम को बहुत ही सरल ढंग से प्रशिक्षकों को समझाया।

इस कार्यशाला में छतरपुर, बीना और पथरिया स्थित आरोह–आजीविका प्रशिक्षण केन्द्र के सभी प्रशिक्षक मौजूद थें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते प्रशिक्षक

इस अंक में

- *प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशाला का आयोजन*
- *ग्रामीणों को रोजगार के प्रति जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम*
- *लाभार्थियों की रोजगार स्थिति*
- *सफल लाभार्थी – आलोचना महतो, राहुल कुमार, सहदेव प्रमाणिक*
- *मीडिया में आरोह–आजीविका (विशेष परियोजना)*

ग्रामीणों को रोजगार के प्रति जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम

झारखंड के बोकारो जिले में चलाया गया कार्यक्रम

घर–घर जाकर बीपीएल लाभार्थियों की जुटाई गई जानकारी

झारखंड के बोकारो जिले में संचालित आजीविका (विशेष परियोजना) के तहत 9 फरवरी को बिरनी ग्रामसभा में बीपीएल लाभार्थियों को रोजगार के प्रति जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। इस परियोजना के जरिए ग्रामीण बीपीएल बेरोजगारों को कौशल प्रशिक्षण के बाद रोजगार से जोड़ने के लिए पंजीकरण किया गया। जागरूकता कार्यक्रम में केन्द्र संचालक उपेन्द्र कुशवाहा ने ग्रामीणवासियों को कार्यक्रम के बारे में बताते हुए कहा कि– "आजीविका (विशेष परियोजना) बीपीएल ग्रामीण वासियों को रोजगार से जोड़ने के लिए चलाई जा रही है। इस कार्यक्रम से जुड़ने वाले अभ्यर्थियों को 3 माह का प्रशिक्षण दिया जाएगा। लाभार्थियों के प्रशिक्षण ट्रेड का चयन उनकी योग्यता के अनुसार किया जाएगा। लाभार्थियों को आईटीईएस, सेल्स रिटेल, हॉस्पिटैलिटी और मल्टीस्किल्ड तकनीशियन ट्रेड में निःशुल्क प्रशिक्षण आरोह फाउंडेशन के केन्द्र पर दिया जाएगा। प्रशिक्षण के उपरान्त लाभार्थियों को प्राइवेट कंपनियों में रोजगार से जोड़ा जाएगा। लाभार्थियों को रोजगार से जोड़े रखने के लिए पहले दो माह तक एक हजार रुपये आर्थिक सहायता राशि भी प्रदान की जाएगी।"

जागरूकता कार्यक्रम में भाग लेते स्थानीय नागरिक

परियोजना के लाभ और सुविधाओं को जानकर श्री सुरेश कुमार महतो (ग्राम प्रधान बिरनी) ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि– "यह हमारे लिए बहुत ही खुशी की बात है कि आरोह फाउंडेशन हमारे जिले में विकास के लिए काम कर रही है। हम सब लोगों के लिए इससे बड़ी खुशी की बात क्या हो सकती है कि संस्था आज खुद हमारे गांव में बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए खुद चलकर आई है। ऐसे में हम सभी लोगों का यह कर्तव्य बनता है कि रोजगार से जुड़ने के लिए सभी लोग संस्था केन्द्र पर अपने सभी दस्तावेजों के साथ जाकर अपना नामांकन कराएं और प्रशिक्षण उपरान्त रोजगार प्राप्त करें। हम सभी लोग आरोह फाउंडेशन के आभारी है जो इस परियोजना के लाभ को घर–घर पहुंचा रहे हैं।"

इस जागरूकता कार्यक्रम में अनिल शर्मा, उपेन्द्र कुशवाहा और उदय शंकर शाही मौजूद थे।

लाभार्थियों की रोजगार स्थिति

आजीविका (विशेष परियोजना) के तहत बुंदेलखंड, बिहार और झारखंड में आरोह फाउंडेशन द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त लाभार्थियों की स्थिति जानने के लिए ट्रैकिंग किया गया। विभिन्न जिलों में संचालित प्रशिक्षण केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त लाभार्थियों की स्थिति जानने हेतु दूरभाष के माध्यम से जानकारी ली गई। उत्तरप्रदेश के झांसी, ललितपुर, जालौन और हमीरपुर से कुल 3326 लाभार्थियों को अब तक प्रशिक्षण दिया जा चुका है जिसमें से लगभग 3287 लाभार्थी अभी भी प्रशिक्षण केन्द्र से जुड़े मिले। मध्यप्रदेश के टीकमगढ़, छतरपुर, सागर और दमोह से कुल 1442 लाभार्थी प्रशिक्षण प्राप्त किए इनमें से वर्तमान समय में लगभग 1421 लाभार्थियों की स्थिति प्राप्त हुई। बिहार में ट्रैकिंग का औसत शत प्रतिशत रहा यहां से कुल 73 लाभार्थियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। झारखंड से 264 लाभार्थियों को प्रशिक्षित किया गया जहां से 194 लाभार्थियों को ट्रैक किया गया। ट्रैकिंग का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षण प्राप्त लाभार्थियों की स्थिति जाननी होती है इसी आधार पर लाभार्थियों का रोजगार के लिए चयन होता है। वर्तमान समय में लगभग 80 फीसदी लाभार्थियों को विभिन्न प्राइवेट कंपनियों में रोजगार दिलाया जा चुका है।

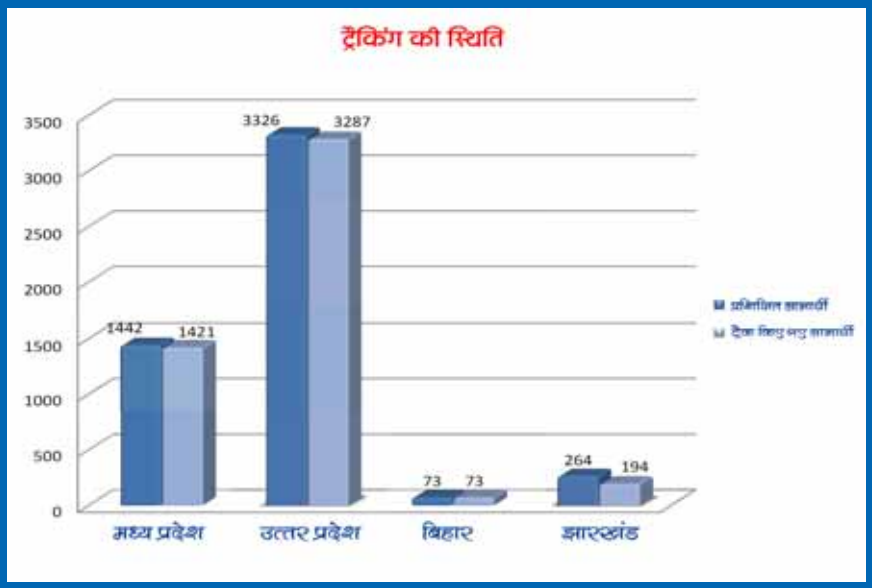

लाभार्थियों के रोजगार की स्थिति का ग्राफ

सफल लाभार्थी

आलोचना महतो
लाभार्थी, आरोह–आजीविका
बोकारो, झारखंड

आलोचना की कहानी कुछ ऐसी है कि जिसे सोचकर उसकी आंख भर आती हैं। आलोचना बोकारो जिले के चास तहसील स्थित मस्जिद टोला, पुपुनकी गांव में रहती है। आलोचना शुरू से पढ़ाई में अव्वल थी लेकिन घर की आर्थिक स्थिति सही ना होने से वह दसवीं के बाद आगे की पढ़ाई नहीं कर पाई। आलोचना अपने पिता के ऊपर बोझ बन कर नहीं रहना चाहती थी उसका सपना था कि वह भी कुछ काम करे जिससे अपने मां–बाप की मदद कर सके। एक दिन आलोचना की मुलाकात आरोह फाउंडेशन के लोगों से हुई जो चास ब्लॉक में आजीविका (विशेष परियोजना) के बारे में जानकारी दे रहे थे। बीपीएल बेरोजगारों के लिए संचालित इस कार्यक्रम से जुड़ने के लिए लोग अपना पंजीकरण करवा रहे थे। आलोचना ने भी वहां जाकर सेल्स रिटेल ट्रेड में अपना पंजीकरण करवाई। आलोचना अपने गांव से 8 किमी दूर आकर आरोह–आजीविका प्रशिक्षण केन्द्र पर 3 माह का निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त की। ट्रेनिंग उपरांत आलोचना की नौकरी गिरीडीह स्थित एक कंपनी में लगवाई गई जहां पर उसको 5000 रुपये प्रतिमाह मिलते हैं। आलोचना का कहना है कि– " आज मैं अपने परिवार की देखभाल बहुत अच्छी तरह से कर रही हूं। मैं अपनी नौकरी से बहुत खुश हूं। मैं अपनी सफलता का श्रेय आरोह फाउंडेशन को देती हूं जिन्होंने हमारे गांव में आजीविका (विशेष परियोजना) का संचालन किया और मुझे नौकरी करने के काबिल बनाया।"

राहुल कुमार
लाभार्थी, आरोह–आजीविका
कोंच, जालौन, उ.प्र.

मेरा नाम राहुल है। मैं जालौन जिले के कोंच तहसील के अटा गांव में रहता हूं। मेरे पिता जी एक किसान है। घर में आमदनी का स्त्रोत सिर्फ खेती है इस कारण परिवार वालों की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती हैं। आर्थिक तंगी के कारण परिवार में हमेशा लड़ाई होती रहती है। घर की समस्या से तंग आकर मैं एक बार दिल्ली नौकरी की तलाश में आया लेकिन मेरे पास ना ही कोई अच्छी शिक्षा थी और ना ही कोई तकनीकी जानकारी इस कारण मुझे कहीं नौकरी नहीं मिलती थी। थक हारकर मैं वापस अपने गांव चला आया और गांव पर ही मजदूरी करके अपना जेब खर्च निकाल लेता था। मैं हमेशा अपने परिवार की गरीबी दूर करने के बारे में सोचता रहता था लेकिन मैं कुछ कर नहीं पाता था। एक दिन मेरी मुलाकात आरोह फाउंडेशन के मोबलाइजर से हुई जो आजीविका (विशेष परियोजना) के बारे में जानकारी देने के लिए मेरे गांव में एक मीटिंग कर रहे थे। मैं वहां जाकर अपना नामांकन करवाया। कोंच स्थित आरोह–आजीविका प्रशिक्षण केन्द्र से सेल्स रिटेल की ट्रेनिंग प्राप्त करने के बाद मेरी नौकरी गुड़गांव स्थित स्पेंसर रिटेल लिमिटेड में लगवाई है। यहां पर मुझे 6000 रुपये मासिक वेतन मिल रहा है। मैं अपनी नौकरी से बहुत खुश हूं और आरोह फाउंडेशन व आजीविका परियोजना को दिल से आभार व्यक्त करता हूं। आज मैं उनकी बदौलत अपने पैरों पर खड़ा हूं।

सहदेव प्रमाणिक
लाभार्थी, आरोह–आजीविका
बोकारो, झारखंड

बोकारो जिले के सरदा गांव में रहने वाले सहदेव ने सोचा नहीं था कि सफलता उनके कदम चूमेगी। गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाले सहदेव ने अपनी मेहनत की दम पर स्नातक की पढ़ाई पूरी की। पढ़ाई पूरी करने के बाद सहदेव ने नौकरी के लिए बहुत कोशिश की किन्तु सफलता नहीं मिली। काम करने का जुनून और आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा के चलते सहदेव को राह मिली। बोकारो के पिण्ड्राजोरा में चलाए जा रहे आरोह–आजीविका प्रशिक्षण केन्द्र से हॉस्पिटैलिटी ट्रेड में 3 माह का निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उसे गिरीडीह स्थित एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी पर लगाया गया। सहदेव को उस कंपनी से 5000 रुपये मासिक वेतन मिलता है। व्यवहार–कुशल सहदेव काम के प्रति इतना लगनशील है कि वह रोजाना समय से कंपनी में जाता है और अपनी नौकरी से बहुत खुश है। सहदेव कहता है वह पहले एक–एक रुपये के लिए मोहताज था लेकिन आज उसके पास स्वयं के चार पैसे हो गए हैं। सहदेव अपनी सफलता का श्रेय आरोह फाउंडेशन और आजीविका (विशेष परियोजना) को देता है।

मीडिया में आरोह-आजीविका (विशेष परियोजना)

रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना लक्ष्य

टीकमगढ़। आरोह आजीविका विशेष परियोजना प्रशिक्षण केन्द्र पर रविवार को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें रोजगार, उन्मुखी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे बेरोजगार युवाओं को रोजगार के बेहत अवसर हासिल करने की निःशुल्क जानकारी दी गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित जीपी शुक्ला ने कहा कि रोजगार के प्रति जागरूक होना बहुत जरूरी है। आरोह फाउंडेशन द्वारा बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण देकर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इससे न सिर्फ युवा अपने काम में समर्पित रहेंगे बल्कि वे पूरी ईमानदारी से रोजगार से भी जुड़ेंगे। कार्यक्रम में एल्युमिनाई मीट का भी आयोजन किया गया। केंद्र प्रभारी मयंक वर्मा ने बताया कि एल्युमिनाई मीट का मुख्य उद्देश्य युवाओं को रोजगार की वास्तविक स्थिति से अवगत कराना है। इसके जरिए लाभार्थियों की ट्रैकिंग भी बेहतर तरीके से होती है। साथ ही उनको बेहतर रोजगार के अवसर के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस अवसर पर प्रशिक्षक अनूप शुक्ला एवं मोबलाइजर धीरेन्द्र बिलगैयां सहित संस्था के पूर्व छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

अपीलः

सभी ग्राम प्रधान, बीडीओ, डीआरडीए, और सम्माननीय अधिकारियों से निवेदन है कि इस कार्यक्रम के तहत आप हमारा पूरा सहयोग करें। जिससे हम इस योजना का लाभ सही और जरूरतमंद लोगों तक पहुँचा सकें। धन्यवाद!

Published by AROH Foundation | F 52, Sector 8, NOIDA 201301 | www.aroh.in | arohfoundation@gmail.com | 0120-432802-08